ईरान का वि-नाभकीयकरण और मध्यपूर्व में पाश्चात्य सामरिक हित

Prof.(Dr.) Deepti Kumari
Dept. of Political Science
Patna University,Patna

ईरान में तेल राजनीति :एक परिचय

- ईरान एक पौराणिक सभ्यता वाला पारम्परिक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राष्ट्र है। ईरान विश्व के पौराणिक सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है। इसका इतिहास आसपास के विस्तृत क्षेत्र से अविभाज्य रूप से जुड़ा रहा।
- डेन्यूब नदी से लेकर सिन्धु नदी तक और काकोकेशस से लेकर दक्षिण में मिस्र तक ईरान इतिहास में फारस का बड़ा साम्राज्य था जो महाशक्ति के रूप में सदियों तक अपनी पहचान बनाए रहा।
- कई आक्रमणों के बाबजूद ईरान अपनी राष्ट्रीय अस्मिता को बराबर पुनः कायम करता रहा है। आज ईरान मध्य पूर्व का शिया-बहुल शक्तिशाली राष्ट्र है।
- तेल मध्य पूर्व की जीवनदायनी है और तेल ही वहां के युद्ध और संघर्ष संरचना का आधार भी।

- मध्य पूर्व की यह तेल सम्पदा पश्चिमी राष्ट्रों को अपने आर्थिक हित में राजनीतिक हस्तक्षेप करने को प्रेरित करती रही है। पश्चिमी राष्ट्रों का प्राथमिक उद्देश्य अपने तेल-प्राकृतिक गैस भंडार को भविष्य के लिए सुरक्षित रखते हुए मध्य पूर्व के तेल भंडार अपना प्रभुत्व जमाना एवं अपने हित में उसका दोहन करना है। मध्य पूर्व के सूखे बलुई क्षेत्र में समस्त संघर्ष की यही जड़ है।
- मध्य पूर्व के राष्ट्रों के पास अपने सुरक्षित तेल भंडारण के दोहन, संरक्षण एवं शोधन के लिए उन्नत तेल तकनीक का अभाव था लेकिन तेल के बदले आर्थिक समृद्धि प्राप्ति का एक मात्र स्रोत और विकल्प तेल का विक्रय था।
- पश्चिमी राष्ट्रों की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने इस दिशा में मदद की पहल की और हस्तक्षेप किया। क्रमशः दोनों छोरों के बीच बढ़ती सम्बन्धों की जटिलता, अंतर्द्वंद ने क्षेत्र में नई तरह के परिदृश्य को रचा है।

- ईस्लामिक जगत पश्चिम से अलग धर्म आधारित कट्टरपंथी और खलिफाओं तथा राजतांत्रिक व्यवस्था वाला जगत है। उसके सांस्कृतिक मूल्य, अवधारणा पश्चिमी जगत से बिलकुल भिन्न है। पश्चिम जो अपने को आधुनिक, लोकतांत्रिक, मानवाधिकारों से युक्त एक समतावादी प्रगतिशील व्यवस्था के रूप स्थापित करता रहा है, उसकी रूचि मध्य पूर्व में इस व्यवस्था की स्थापना या पहल करना नहीं थी।
- पश्चिम का इस क्षेत्र में एकमात्र हित "तेल की प्राप्ति" ही थी। इस उद्देश्य की पूर्ति में पश्चिम ने अमेरिका के नेतृत्व में यहां 'सत्ता स्थापना' एवं 'सत्ता विरोध' की रणनीति पर चलता रहा। अपनी सारी शक्ति मध्यपूर्व के अधिकांशतः क्षेत्र में अपने समर्थित सत्ता के प्रसार में लगा दी।

- राष्ट्रों में हस्तक्षेप, सामरिक सैन्य, आर्थिक समर्थन, संघर्ष, युद्ध, तख्ता पलट, सैन्य सामरिक अड्डों की स्थापना एवं हथियारों का व्यापार सब इसी उपक्रम कड़ी है।
- अरब-इजरायल युद्ध, अरब राष्ट्रों के समानांतर इजरायल की स्थापना और स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता तथा समर्थन पश्चिम की 'एक अरब राष्ट्रवाद' के प्रति संतुलन की नीति का ही परिणाम है।
- शीत युद्ध के कड़वाहट भरे दौर में सोवियत संघ का भी शामिल होना इसमें कई नये पेंच को उलझाया और इस समस्या को और जटिलतर बनाया। इस बहाने शीत के दौर में दोनों महाशक्तियों ने क्षेत्र में अपने सामरिक और आर्थिक हित साधे (हथियार-व्यापार, तेल-संधि, बहुराष्ट्रीय तेल कम्पनियों का निवेश और तेल समझौता)।

- पश्चिम तथा रूस दोनों की ही अप्रत्यक्ष रूप से ईरान पर अधिपत्य जमाने की कोशिश रही है। 1979 की क्रांति के पहले तक ईरान में लगभग पश्चिम समर्थक पहलवी वंश का राज था। पहलवी वंश तेल बिक्री से आयी आर्थिक समृद्धि से एक खास वर्ग के साथ विलासिता में डूबा था। ईरान का पूरी तरह से पश्चिमीकरण हो गया।
- पहलवी शासन में असफल आर्थिक प्रबन्ध, असामानता और गम्भीर विलासिता के आरोप थे। शहरी विशिष्ट अमीर वर्ग और शेष ईरान में भयंकर आर्थिक विषमता थी। साथ-ही-साथ ईरान अपने पौराणिक, ईस्लामिक, पारम्परिक और सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए छटपटा रहा था।

- खमैनेइ ने निर्वाचन के साथ इसकी स्थापना का आवाहन कर क्रांति का समर्थन किया। ईरान में 1979 की ईस्लामिक क्रांति सफल हुई और पहलवी वंश की समाप्ति के साथ ही ईरान गणराज्य घोषित हुआ।
- खमैनेइ सर्वोच्च धार्मिक नेता (आयातुल्ला) के रूप स्थापित हुए।
- ईरान में लोकतांत्रिक निर्वाचन और मताधिकार की व्यवस्था को भी स्वीकृति मिली।

ईरान में इस्लामी क्रांति, सम्पन्नता और क्षेत्रीय महत्वाकांक्षा :

- इस्लामी क्रांति के बाद नये सत्ता परिवर्तन ने ईरान को एक कट्टरपंथी ईस्लामी अन्तर्मुखी राष्ट्र के रूप में परिणत कर दिया जिसका मुख्य स्वर पश्चिम और अमेरिका-विरोधी था। अब इस नये दौर में पश्चिम को पहलवी दौर में प्राप्त सुख समाप्त हो गया। प्रतिक्रिया स्वरूप पश्चिम का ईरान के प्रति रूख और कड़ा हुआ।
- 1980 में इराक का ईरान पर हमला (अमेरिका समर्थित) और शिया-सुन्नी रंग के साथ 8 वर्षों तक चला युद्ध इसी की परिणति थी। इसके माध्यम से दोनों ही महाशक्तियों ने क्षेत्र में अपने सामरिक और व्यापारिक हित साधे।

- ईरान पूरी ही रणनीतिक एवं कूटनीतिक स्थितियों में एक-दूसरे दृष्टिकोण से भी मध्य पूर्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला राष्ट्र है। ना सिर्फ अपनी ऐतिहासिक, भू-राजनीतिक एवं आर्थिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण से बल्कि धार्मिक दृष्टि से शिया बहुल राष्ट्र होने के कारण भी । पूरे ईस्लामिक जगत में सुन्नी बहुलता है जबकि शिया अल्पसंख्यक हैं। ईरान मध्य पूर्व का सबसे बड़ा शिया बहुल राष्ट्र है। इस रूप में ईरान अपने को ईस्लामिक जगत में सर्वोच्च स्थान पर रखते हुए उसके नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित होने की महत्वकांक्षा रखता है।
- जबकि मध्य पूर्व के अन्य सुन्नी बहुल राष्ट्र जिसमें सउदी अरब सबसे बड़ा बहावी मुस्लिम सम्प्रदाय का है वह ज्यादा कट्टर और शिया विरोधी है। सउदी अरब को अमेरिका का आर्थिक, व्यापारिक तथा सामरिक समर्थन प्राप्त है तथा पश्चिमी राष्ट्र ईरान को प्रति संतुलन करने हेतु सुन्नी बहुल राष्ट्र का उपयोग करते हैं।

- वस्तुतः ईरान तथा सुन्नी बहुल मुस्लिम जगत विशेषतः सउदी अरब के साथ वैमन्सय का आधार शिया-सुन्नी सम्प्रदाय तथा इसी आधार पर मुस्लिम जगत का सर्वमान्य नेतृत्वकर्ता राष्ट्र के रूप में मान्यता प्राप्त करने की महत्वकांक्षा है। इसी आधार पर ईरान शिया बहुल राष्ट्रों के सत्ता प्राप्ति संघर्ष में समर्थन जैसे लेबनान में कट्टरपंथी ईस्लामिक गुट नसरल्ला, फिलीस्तीन में हमास, सीरिया में अशद सरकार का समर्थन करता रहा है।
- इजरायल के साथ भी अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा ईरान का कड़ा रूख है। अन्य अरब राष्ट्र व्यवहारिक तौर पर इजरायल के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। पर ईरान इजरायल को एक हमलावार राष्ट्र मानते हुए उसके अस्तित्व को नकारता है और मान्यता नहीं देता है। मध्य पूर्व क्षेत्र में ईरान का इजरायल के साथ सबसे ज्यादा शत्रुतापूर्ण सम्बन्ध है।

- अमेरिका का ईरान विरोधी होने का एक कारण यह भी यह है कि ईरान इजरायल को मध्य पूर्व की तेल सम्पदा पर पश्चिम द्वारा प्रभुत्व की इच्छा का प्रतिफल मानता है और इजरायल की समाप्ति की इच्छा रखता है। इसी कारण पश्चिमी राष्ट्र अपने विरोधी खेमे का "शैतान राष्ट्रों की धुरी" की श्रेणी में रखते हैं। ईरान 1979 की क्रांति के बाद भी 'अपारदर्शी' राष्ट्र ही बना हुआ है।
- वस्तुतः मध्य पूर्व के देशों में ईस्लामिक गणतंत्र के बारे में बाहर की दुनिया आधा अधुरा ही जानती है।

- देश की आंतरिक गुटबंदी, सत्ता का संघर्ष और अपारदर्शी राजनीतिक तथा सामाजिक स्थिति के कारण इसकी पूरी समझ ना इसके पक्षधरों को है और ना विरोधियों को। ईरान की अन्तर्राष्ट्रीय नीति और उसकी दुनिया के अन्य देशों से सम्बन्ध या तो अन्तर्विरोधपूर्ण है या अस्पष्ट।
- लम्बे अरसे तक ईरान की अरब देशों से खासकर उन देशों से जिनका नेतृत्व सुन्नी मुसलमानों के हांथो में था, विरोध और दुश्मनी के रहे। नया ईरान अरब जगत से दोस्ती चाहता है लेकिन सउदी अरब के साथ उसके सम्बन्ध हमेशा दोस्ती के कम दुश्मनी के ज्यादा रहे हैं। शिया-सुन्नी वैमनस्य इसका आधार है।
- अरब जगत में ईरान की ईस्लामिक परम्परा मूल्यों और संस्कृति के नेतृत्व की महत्वकांक्षा रही है। वह अपने को ईस्लामिक गौरव का प्रतिनिधि समझता है जबकि सुन्नी जगत में इसका विरोध रहा है।

ईरान की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षा और अणुशक्ति-गौरव

- पिछले दशक में ईरान की परमाणु तकनीक क्षमता की प्राप्ति, युरेनियम संवृद्धिकरण की क्षमता और परमाणु सम्पन्न राष्ट्र की स्थिति ने पश्चिमी राष्ट्रों की नींद उड़ा दी है। सउदी अरब और इजरायल इसके धुर विरोधी है। ईरान का परमाणु क्षमता हासिल करना, क्षेत्र में नये सामरिक और रणनीतिक सम्भावनाओं को खोलता है तथा यह ईरान के साथ पश्चिम के सम्बन्ध की पुनार्ब्याख्या का भी दौर है। तय है कि परमाणु क्षमता सम्पन्न राष्ट्रों के पास अपनी सैन्य सर्वोचता का यह बड़ा शस्त्र है, इसी आधार पर शक्तिशाली पारम्परिक सैन्य शक्ति पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। एक ईस्लामिक, कट्टर, असहिष्णु, अपारदर्शी तथाकथित गैर जिम्मेदार, पश्चिम विरोधी राष्ट्र ईरान का परमाणु शक्ति सम्पन्न होना पश्चिमी जगत के लिए गहरी चिन्ता का विषय है। जबकि इसी के समानांतर ईस्लामिक एवं अरब जगत के अन्य राष्ट्र पाकिस्तान, सउदी अरब, ईजरायल और ईराक भी इस होड़ में शामिल है।

- ईरान का मानना है कि उसके परमाणु कार्यक्रम शांतिपूर्ण और अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए है।
- सुन्नी बहुल अरब जगत में परमाणु शक्ति सम्पन्न शिया बहुल राष्ट्र ईरान इजरायल विरोधी कट्टर आतंकवादी संगठनों को एक नया नेतृत्व और विकल्प दे रहा है, अमेरिका और पश्चिम को यह ईरान की खुली चुनौती है। विश्व के परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों के लिए यह दोहरे खतरे की घंटी है। पहला तो यह की एक विरोधी खेमे वाले राष्ट्र के पास परमाणु शक्ति सम्पन्नता आ रही है जिसका तकनीक हस्तानांतरण विरोधी राष्ट्रों तक भी हो सकता है। दूसरा यह कि अमेरिका के तमाम कोशिशों के बावजूद ईरान परमाणु निशस्त्रीकरण और अप्रसार को ही विफल कर रहा है।

- विगत वर्षों में पश्चिमी परमाणु सम्पन्न राष्ट्रों की कोशिश रही है कि अपनी परमाणु तकनीक और हथियार को सुरक्षित रखते हुए अन्य राष्ट्रों के इसके तकनीक हस्तानंतरण और शक्ति सम्पन्नता प्राप्त करने से रोका जाए। एनपीटी, सीटीबीटी और एनएसजी सदस्यता जैसे वैश्विक परमाणु निशस्त्रीकरण के मुद्दे इसी उद्देश्य से संचालित हैं और अधिकांशतः राष्ट्रों को इस घेरे में लाने की कोशिश है।
- परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों को सिर्फ परमाणु हथियारों की चुनौती ही नहीं है बल्कि इस तकनीक के माध्यम से वैकल्पिक ऊर्जा व्यापार पर भी एकाधिकार समाप्त होने की भी सम्भावना है। दूसरी ओर नये परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र भारतए ईरान और उत्तर कोरिया जैसे राष्ट्रों का मानना रहा है कि वह बड़ी मात्रा में ऊर्जा खपत करने वाला राष्ट्र है।

- जिनकी ऊर्जा की आवश्यकताओं की पूर्ति पारम्परिक ऊर्जा स्रोत से नहीं हो सकती है, अतः वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत की प्राप्ति हेतु उसके परमाणु कार्यक्रम शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए संचालित हैं। जबकि शक्तिशाली परमाणु सम्पन्न राष्ट्र इनके परमाणु कार्यक्रम पर प्रतिबंध लगाने, परमाणु निशस्त्रीकरण संधि पर हस्ताक्षर करने तथा अपने परमाणु केन्द्र एवं संयंत्रों को आईएईए (अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेन्सी) के निरीक्षण और निगरानी में रखने पर जोर देते हैं।
- विकासशील राष्ट्रों का अपने वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत हेतु परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों से शांतिपूर्ण परमाणु, हरित, किफायती तकनीक प्राप्त करने की कोशिश रही है और पश्चिमी राष्ट्रों पर इसे विकासशील राष्ट्रों हस्तांतरित ना करने की शिकायत भी। नये परमाणु शक्ति सम्पन्नता की ओर अग्रसर राष्ट्रों पर पश्चिमी परमाणु सम्पन्न राष्ट्र हमेशा हथियार विकसित करने के उद्देश्य से संचालित मानते हैं। उनका एकमात्र लक्ष्य परमाणु प्रसार को रोकना है।

- ईरान के साथ अमेरिका का सम्बन्ध ईरान जैसे विरोधी खेमे के राष्ट्र परमाणु शक्ति प्राप्त करना दोनों के सम्बन्धों में और कड़वाहट लाया है। ईरान के साथ अमेरिका के सम्बन्ध बेहद तनावपूर्ण हैं। अमेरिका ईरान को एक शैतान, पश्चिम विरोधी, अपारदर्शी और कट्टर ईस्लामिक खेमे के नेतृत्वकर्ता के रूप में देखता है।
- मध्य पूर्व की राजनीति में अमेरिकी आर्थिक, सामरिक और कूटनीतिक हितों को साधने में ईरान एक बड़ी बाधा है। अमेरिका ने संतुलन की राजनीति के तहत सुन्नी बहुल राष्ट्रों (सउदी अरब, पाकिस्तान, भारत) के साथ कूटनीतिक, आर्थिक गठजोड़ मजबूत करता दिखता है। उसकी कोशिश ईरान को मुस्लिम राष्ट्र के नेतृत्वकर्ता के रूप न उभरने देने की है।

- ईरान के बढ़ते आणविक कार्यक्रम तथा उसकी हथियारों के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता अमेरिका के लिए गम्भीर चुनौती है। जबकि ईरान का मानना है कि वह निर्विवाद रूप से मुस्लिम जगत में सर्वोच्च स्थान पर है और मुस्लिम जगत का नेतृत्वकर्ता है। उसका परमाणु कार्यक्रम भी शांतिपूर्ण है जो उसकी बढ़ती ऊर्जा जरूरतों के लिए आवश्यक है। इसके परिणामस्वरूप ईरान को अमेरिका की नाराजगी और लम्बे समय तक आर्थिक प्रतिबंध झेलना पड़ा।
- अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में तेल, प्राकृतिक गैस जो उसकी आय का बड़ा स्रोत है उसकी बिक्री पर प्रतिबंध लगा रहा है। उसकी अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा भी जब्त रखी गयी है। जिन राष्ट्रों के साथ ईरान के मधुर सम्बन्ध थे जैसे भारत, उन्हें ईरान से गैस और तेल के आयात पर प्रतिबंध का दबाव डाला गया।

- ईरान की आर्थिक स्थिति उसके पेट्रोलियम पदार्थो के उत्पादन और निर्यात पर पूरी तरह से निर्भर है। पश्चिम और अमेरिका के साथ कटु सम्बन्धों का सीधा असर ईरान के तेल निर्यात पर पड़ता है फिर भी ईरान इस भारी आर्थिक क्षति को उठाते हुए भी अमेरिका विरोधी स्वर से समझौता करता नजर नहीं आता। अमेरिका का ईरान विरोधी कड़ा रवैया और सम्बन्धों में कड़वाहट का बड़ा कारण इजरायली लोबी का अमेरिका पर बढ़ता दबाव और अमेरिका का इजरायल समर्थक नीति है।
- पर 2014 आते-आते परिस्थितियां बदली। सुन्नी बहुल आई।एस।आई।एस। का ईस्लामिक जगत में बढ़ता प्रभाव, रूस, चीन तथा भारत के साथ ईरान की बढ़ती नजदिकियां, सीरिया में ईरान का बढ़ता प्रभाव, रूस द्वारा ईरान को सामरिक समर्थन तथा अमेरिका के बढ़ती सुन्नी कट्टरता को प्रतिसंतुलित करने हेतु बढ़ता शिया समर्थन ने ईरान के साथ अमेरिका के सम्बन्धों को नये परिप्रेक्ष्य में पुनार्व्याख्यित किया है।

- वस्तुतः ईरान ने प्रतिबंधों के दौर में ही अरब तथा फारस की खाड़ियों के क्षेत्र में एवं यूरेशिया के साथ अच्छे सम्बन्धों को विकसित करने की कोशिश की है। पश्चिमी देशों की अपेक्षा अब ईरानी नेतृत्व अपने पड़ोशियों और एशियाई राष्ट्रों के सकारात्मक सम्बन्ध विकसित करने का प्राथमिकता दे रहा है। सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सचिव अली लरीजानी के शब्दों में "दुनिया के पूर्वी गोलार्द्ध में रूस, चीन, और भारत जैसे महादेश हैं। आज की दुनिया में वे संतुलन कायम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।"
- रूस इन सारी स्थितियों में ईरान से नजदीक रहा है। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद से ही रूस ईरान का मध्य पूर्व में बड़ा साथी है। उसके ईरान के साथ मजबूत आर्थिक और सामरिक सम्बन्ध है, इसलिए शायद रूस उस हद तक ईरान के परमाणु कार्यक्रम का विरोध भी नहीं करता। इन्हीं परिस्थितियों में अमेरिका तथा परमाणु-सम्पन्न राष्ट्रों को ईरान को परमाणु शक्ति राष्ट्र के रूप में मानते हुए 2013 तथा 2015 में उसके समझौता करने को बाध्य होना पड़ा।

ईरान तथा वैश्विक परमाणु शक्ति-सम्पन्न राष्ट्रों के मध्य समझौता

- ईरान और उत्तरी कोरिया के साथ परमाणु समझौतों के बीच साम्यतायें खोजी जा रही हैं। 2002 से ईरानी परमाणु कार्यक्रम के बाद संकट की शुरूआत हुई। ईरान ने अपने परमाणु कार्यक्रम की सार्वजनिक घोषणा की। फलस्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ, वैश्विक परमाणु शक्तियां और यूरोपीय यूनियन सभी ने ईरान पर प्रतिबंध लगाए ताकि ईरान अपने सैन्य परमाणु क्षमता को प्राप्त नहीं कर पाये।
- 2013 में, जेनेवा में ज्वाईन्ट प्रोग्राम आफ एक्शन के तहत दोनों पक्षों के बीच एक अंतरिम समझौता हुआ जिसके द्वारा संयुक्त राष्ट्र, विश्व शक्तियां और ईरान आपस में सहमत हुए कि ईरान के यूरेनियम संवर्द्धन कार्य और उसके संदेहास्पद परमाणु संयंत्रों तक संयुक्त राष्ट्र निरीक्षकों की पहुंच होगी। बदले में ईरान को 7 बिलियन डालर प्रतिबंध राहत के रूप में प्राप्त हुए ।

- दिनांक 2 अप्रैल 2015 को ईरान तथा परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र जर्मनी एवं यूरोपीय यूनियन (पी-5, जर्मनी तथा ई।यू।) के बीच समझौता हुआ। समझौते में दोनों पक्ष सहमत हुए कि 6 माह के अन्दर कई चरणों में कदम उठाये जाएंगे और इसी अवधि में अंतिम तौर पर ज्यादा निर्णयकारी समझौते पर पहुंचा जाएगा।
- ईरान की तरफ से किया गया वादों के अनुसार, ईरान 20 प्रतिशत की शुद्धता वाला संवर्द्धित यूरेनियम का उत्पादन रोकेगा और सेन्ट्रीफ्यूज गास्केट के कन्फिग्रेशन को समाप्त करेगा जो यूरेनियम संवर्द्धन का काम करता है। जो पहले से सवंर्द्धित यूरेनियम है उसे नष्ट और कम करे।

- नतांज और फोरोन्दो परमाणु संयंत्र में यूरेनियम संवर्द्धन नहीं करेगा। सेन्ट्रीफ्यूज उत्पादन को ईरान सीमित करेगा और उतना की उत्पादन करेगा जितना क्षतिग्रस्त मशीनों में लगाया जा सके, नये में नहीं।इसके अतिरिक्त नये यूरेनियम संवर्द्धन का कार्य नहीं किया जाएगा।
- ऐराक में भारी पानी रिएक्टर का जो प्लांट है उसे ईंधन की आपूर्ति और चालू नहीं करेगा। अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेन्सी (आई।ए।ई।।ए।) नतांज, फोरोन्दो और ऐराक में दौरा और निरीक्षण करेगा। नतांज और फोरोन्दो संयंत्रों में आई।ए।ई।।ए। के प्रतिनिधि मंडल प्रत्येक दिन तथा ऐराक में महीने में एक बार जाएगें। वर्तमान में ईरान को 5 प्रतिशत तक की शुद्धता वाला यूरेनियम संवर्द्धन की छूट है उसे भी आगे नहीं बढ़ाएगा।

- वहीँ समझौते में शामिल आणविक शक्तियों ने वायदा किया है कि विश्व की परमाणु शक्तियां ईरान को चार प्रकार से राहत देगी ताकि ईरान अपने शांतिपूर्ण परमाणु कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।
- यह एक अस्थायी समयावधि के लिए , सीमित लक्ष्यों वाला, लक्षित या समयबद्ध व् पलट सकने वाला प्रकृति का समझौता है यदि ईरान अपनी तरफ से किये गए वायदों को पूरा नहीं करता है तो ईरान पर पुनः प्रतिबंधों की वापसी होगी।
- ईरान यदि अपने वादे को निभाएगा तो भविष्य में उस पर परमाणु सम्बन्धी कोई भी प्रतिबन्ध नहीं लगेगा। ईरान पर पेट्रोकेमिकल के निर्यात पर लगा प्रतिबंध स्थगित किया जाएगा।

- ईरान 4।2 बिलियन डालर का जो तेल राजस्व है उसे ईरान को क़िस्तों में वापस किया जाएगा। सोना तथा अन्य कीमती धातुओं पर लगे आयात-निर्यात का प्रतिबंध समाप्त होगा।
- ईरान के नागरिक उड्डयन उद्योग में सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण कलपूर्जों की आपूर्ति विश्व शक्तियां ईरान को करेंगी। वित्तीय लेन-देन के लिए यूरोपीय यूनियन अपने आंतरिक प्रक्रिया को संशोधित करेगा। समझौते के बाद क्रमशः ईरान पर से आर्थिक प्रतिबंधों की समाप्ति होगी।
- ईरान तेल एवं गैस व्यापार के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के मुख्य धारा में शामिल होगा तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में जब्त मुद्रा राशि की वापसी होगी।

- वस्तुतः यह समझौता ईरान का मध्य पूर्व में बढ़ता प्रभाव एवं अमेरिका की ईरान के माध्यम से सुन्नी कट्टरपंथी गुटों पर नकेल कसने की इच्छा का परिणाम है। इस समझौते के द्वारा दोनों पक्षों को कई तरह के लाभ हैं।
- पश्चिमी राष्ट्रों के लिए बड़ी राहत की बात यह है कि इससे एक बड़े विरोधी गुट के राष्ट्र का परमाणु कार्यक्रम अन्तर्राष्ट्रीय निगरानी के क्षेत्र में आ जाएगा। जबकि ईरान को बड़ा फायदा अपने आर्थिक प्रतिबंधों की समाप्ति जिसके कारण उसकी अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित थी।
- ईरान समझौते के बाद विश्व राजनीति तथा तेल व्यवसाय की मुख्य धारा में वापस आना चाहता है। अपने परमाणु क्षेत्रों को उसने अन्तर्राष्ट्रीय पर्यवेक्षकों के लिए खोल दिया है और बदले में पश्चिमी जगत ने उस परे लगे आर्थिक/व्यवसायिक प्रतिबंधों में ढ़ील दे दी है।

- ईरान की प्राथमिकता पश्चिमी राष्ट्रों के साथ दोस्ताना सम्बन्धों की अपेक्षा पड़ोसी तथा एशियाई राष्ट्रों के साथ मधुर सम्बन्धों की स्थापना है। यह मध्य पूर्व में ईरान की बढ़ती कूटनीतिक सफलता है।
- सीरिया में भी अप्रत्यक्ष रूप से रूस के साथ मिलकर ईरान समर्थित शिया राष्ट्रपति अशद का सत्ता कायम रखना भी ईरान की बड़ी जीत है। वास्तव में, सीरिया तथा यमन के गृह युद्ध में ईरान की बड़ी ताकत के रूप में उभरा है।
- ईरान ने नये मित्रों और समीकरणों के साथ मध्य पूर्व की राजनीति में नये ढ़ंग से वापसी की है। मध्य पूर्व की राजनीति में ईरान की सफल भूमिका और उसकी बढ़ती ताकत का यह नया संकेत है।

- अमेरिका मध्यपूर्व में अपने सबसे घनिष्ठ मित्र इजराइल की सुरक्षा के लिए चिंतित रहता है। कोई भी क्षेत्रीय मुस्लिम ताक़त इजराइल के राजनीतिक अस्तित्व के लिए घातक हो सकती है। दूसरे अमेरिका में यहूदी धनकुबेर महत्वपूर्ण स्थानों पर काबिज़ हैं और अमेरिकी नीति को इजराइल के पक्ष में मोड़ देते हैं। ईरान को इस सामान्य स्थिति का भी सामना करना पड़ता है।
- अमेरिका के दक्षिणपंथी हलकों और विचारकों का मानना है, जिसकी अगुयाई खुद अमेरिकी राष्ट्रपति कर रहे हैं कि अमेरिका सहित अन्य महाशक्तियों के द्वारा ईरान के साथ जो वि-नाभकीयकरण संधि की गयी है वह अनुचित है। राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा है कि वहा समझौते को 'प्रमाणित' नहीं करेंगे क्योंकि समझौते की शर्ते 'अनुपयुक्त और असमानुपातिक' है। इस बात में शायद ही अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी को संदेह है कि ईरान नाभकीय कार्यक्रम में संलिप्त है मगर इसके कोई सबूत नहीं मिलें हैं कि ये सैनिक प्रयोग के लिए है।

- हम ईराक के ऊपर जनसंहार के हथियार का आरोपण को देख सकते हैं। ईराक़ तबाह भी हो गया हजारों बेगुनाह मारे गए और लाखों विस्थापित या बेघर हो गए। अमेरिकी और ब्रिटिश सैन्य अधिकारियों ने सिर्फ़ गलती होने का कूटनीतिक ढोंग भर किया। जब भी ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर प्रतिबन्ध और पाबन्दी की बात होती है तो अंतर्राष्ट्रीय समाज की इस सोच को तो स्थान दिया जाता है कि ईरान की नाभकीय महत्वाकांक्षा पर शिकंजा कसा जाना चाहिए। मगर, ईरान के राष्ट्रीय जनमत को या तो नज़रन्दाज़ कर दिया जाता है या माना जाता है कि वह भी नाभकीय हथियारों के पक्ष में है।
- सच्चाई यह है कि अधिकांश ईरानी नाभकीय तकनीक और इसके शांतिपूर्ण प्रयोगों के पक्ष में है। मगर वे नहीं चाहते कि नाभकीय तकनीक का प्रयोग घातक और विध्वंसक हथियारों के निर्माण के लिए किया जाए ईरान के साथ सम्पूर्ण दुनिया के लिए अहितकर है। ईरानी राष्ट्रपति अहमदीनेजाद ने इस समझौते को एक से 'वैज्ञानिक रंगभेद' का नाम दिया।

- ईरान के कई नेता मानते हैं अमेरिका अपने मित्र राष्ट्रों को लम्बे समय तक ईरान के विनाभिकीकरण पर एकजुट नहीं रेखा पायेगा और धीरे-धीरे ईरान को उन्मुक्ति या छूट मिलने की सम्भावना है और बीच के समय में ईरान अपनी आर्थिक स्थिति सुधार लेगा और आंतरिक आर्थिक विकास कर जनमत को वर्तमान व्यवस्था का हामी बनाये रखा सकता है।
- पश्चिमी विश्व ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर चार प्रमुख उद्देश्य व्यक्त करता है- प्रथम, इजराइल और इजराइलयों का विनाश; द्वितीय, विदेशी आक्रमण और वर्चस्व की कोशिश से ईरानी व्यवस्था और शासन को बचाना; तृतीय, ईरानी आक्रमकता और चौधराहट को भयादोहन के हथियार के रूप में इस्तेमाल करना तथा ईरान के तकनीकी-राष्ट्रगौरव का उद्घोष करना।

- अगर हम सैद्धांतिक पहलू से गौर करें तो कह सकते हैं कि पाकिस्तान एक परमाणु हथियारों की क्षमता वाला देश है और लम्बे समय से राजनीतिक उठापटक, अस्थायित्व और बदलावों से रू-ब-रू होता रहा है। आतंकवादियों को सहायता भी मुहैया कराता रहा है मगर इस तरह की सोच वाले देश ने भी कभी आणविक हथियारों को किसी आतंकवादी संगठन को उपलब्ध नहीं कराये है।
- ईरान अपेक्षाकृत कहीं अधिक स्थयित्व और आर्थिक रूप से सक्षम देश है और इस बात की संभावना काफ़ी कम है कि वह ऐसा लापरवाही और दुनिया की सुरक्षा और शांति को खतरे में डालने वाला कदम उठा सकता है। ईरान के शीर्ष नेता अयातुल्ला खमैनी एक फतवे के तहत परमाणु हथियारों को गैर-इस्लामी घोषित का चुके है।

- एनपीटी और सीटीबीटी जैसी संधियों का सैद्धानिक मकसद ज़रूर नाभकीय हथियारों पर प्रतिबन्ध लगाने वाला है कितु ये संधियाँ पाश्चात्य देशों के सामरिक हितों के अनुकूल और उनके टैक्टिकल या रणनीतिक वर्चस्व की यथास्थिति को बनाए रखने वाली नियामक व्यवस्थाएं हैं।
- अमेरिका और अन्य नाभकीय शक्ति संपन्न देशों के द्वारा ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर लगे प्रतिबंधों को भी इसी प्रकाश में देखा जन चाहिए।

निष्कर्ष

अमेरिका मध्यपूर्व में किसी भी राष्ट्र को शक्तिशाली होते हुए नहीं देखना चाहता और उसे यूरोप की सुरक्षा व्यवस्था के लिए ख़तरा महसूस करता है। साथ ही किसी भी स्थानीय राष्ट्र को क्षेत्रीय शक्ति के रूप में भी उभरने नहीं देना चाहता। यूरोपीय और अमेरिकी समझौते को इस दृष्टिकोण से भी देखे जाने की आवश्यकता है। मध्यपूर्व के देश इस तथ्य से भी अवगत हैं कि अब अमेरिका आर्थिक और वित्तीय रूप से इतना सक्षम नहीं है जितना पूर्व में. मध्यपूर्व में उसकी उपस्थिति क्रमशः अवरोहन की प्रक्रिया में विन्यस्त हो चुकी है। मगर यूरोपीय दावे भी धातव्य हैं कि तेल से अरबों डॉलर कमाने वाले देश के लिए और तेल के विशाल भण्डार के मालिक को नाभकीय तकनीक के लिए नतान्ज़ और अराक में भरी जल रिएक्टर और यूरेनियम संवर्धन की क्या आवश्यकता है?

उसकी सामरिक उलझन बहुआयामी है एक ओर तो उसे सुन्नी-विरोध के साथ- साथ अमेरिका सहित पूरे पश्चिमी विश्व तथा इजराइल के विरोध का सामना करना पड़ता है; दूसरी ओर ईरान में वैज्ञानिक और तकनीकी स्वाबलम्बन भी है । उसे अपने स्वतंत्र सांस्कृतिक व् धार्मिक पहचान के अस्तित्व को सहेजे रखने की सोच सामरिक रूप से मध्य एशिया में सर्वप्रमुख राष्ट्र के रूप में स्थापित होने के लिए विवश करता है। इस असुरक्षा बोध तथा क्षमता दोनों ने ही उसे परमाणु तकनीकी क्षमता हासिल करने की ओर प्रेरित किया है। अपने परमाणु कार्यक्रम को भले ही ईरान शांतिपूर्ण या वैकल्पिक उर्जा स्रोत की पूर्ति करने वाला घोषित करे पर सच्चाई यह है की अरब जगत में अपने को सर्वोच्च इस्लामिक शक्ति के रूप में स्थापित करने की बहुप्रतीक्षित महत्वाकांक्षा ही ईरान को इस दिशा में प्रेरित कर रही है । इस क्षमता के द्वारा ही ईरान राजनीतिक और सामरिक हितों और उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहता है।